

"मैं बादलों की तरह अकेला भटकता रहा"

Translated by- मितांशु नरानिया

मैं बादल की तरह अकेला भटकता रहा
जो ऊंचे से वादियों और पहाड़ियों पर तैरता है,
जब अचानक मैंने एक भीड़ देखी,
एक समूह, सुनहरी डैफोडिल्स का;
झील के पास, पेड़ों के नीचे,
हवा में फड़फड़ाते और नाचते हुए।

निरंतर, जैसे तारे चमकते हैं
और आकाशगंगा में टिमटिमाते हैं,
वे अनंत रेखा में फैले हुए थे
एक खाड़ी के किनारे पर:
दस हजार मैंने एक नज़र में देखे,
जोशपूर्ण नृत्य में सिर हिलाते हुए।

लहरें उनके बगल में नाच रही थीं; लेकिन वे
चमकती लहरों से भी अधिक खुशी में:
एक कवि खुश हुए बिना नहीं रह सकता था,
ऐसी आनंदित संगति में:
मैं देखता रहा—और देखता रहा—पर थोड़ा ही सोचा
इस दृश्य ने मुझे क्या संपत्ति दी थी:

क्योंकि अक्सर, जब मैं अपने सोफे पर लेटा होता हूँ
खाली या चिंताजनक मूड में,
वे उस अंतर्निहित आँख पर चमकते हैं
जो एकांत का आनंद है;
और फिर मेरा दिल खुशी से भर जाता है,
और डैफोडिल्स के साथ नाचता है।

Original text:
William Wordsworth

I wandered lonely as a cloud
That floats on high o'er vales and hills,
When all at once I saw a crowd,
A host, of golden daffodils;
Beside the lake, beneath the trees,
Fluttering and dancing in the breeze.

Continuous as the stars that shine
And twinkle on the milky way,
They stretched in never-ending line
Along the margin of a bay:
Ten thousand saw I at a glance,
Tossing their heads in sprightly dance.

The waves beside them danced; but they
Out-did the sparkling waves in glee:
A poet could not but be gay,
In such a jocund company:
I gazed—and gazed—but little thought
What wealth the show to me had brought:

For oft, when on my couch I lie
In vacant or in pensive mood,
They flash upon that inward eye
Which is the bliss of solitude;
And then my heart with pleasure fills,
And dances with the daffodils.